विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

गोल्डन आवर में उपचार से बचाई जा सकती है जान

नई दिल्ली, जागरण संवाददाता : ट्रामेटिक ब्रेन इंज्युरी (टीबीआइ) का इलाज न्यूरो रिहैबिलिटेशन से किया जा सकता है। इससे मरीज की स्थिति में तेजी से सुधार होता है और मरीज अपनी सामान्य जिंदगी जी सकता है। यह बात अपोलो सीनियर कंसलटेंट न्यूरो सर्जन डा. राजेंद्र प्रसाद ने दिल्ली न्यूरोलॉजी एसोसिएशन के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन में कही।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए डा. राजेंद्र प्रसाद (जो इंडियन हेड इंज्युरी फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक भी है) ने कहा कि टीबीआइ से मृत्यु के आधे मामलों में इंज्युरी के दो घंटों के अंदर मरीज की मौत हो जाती है। दरअसल चोट लगते ही (प्राइमरी इंज्युरी) सभी न्यूरोलाजिकल डैमेज (मस्तिष्क आघात से क्षति)नहीं होते है। अगले कुछ मिनटों, घंटों और दिनों में नजर आने वाले डैमेज अधिक मृत्यु और विकलांगता के कारण साबित होते हैं। यही कारण है ऐसे में मरीज को तुरंत बचाने में तुरंत सटीक इलाज की खासी अहमियत है।

उन्होंने कहा कि दुर्घटना के बाद एक घंटे के समय को गोल्डन आवर कहा जाता है। इस गोल्डन आवर में सही उपचार से कई जानें बचाई जा सकती है और टीबीआई के चलते विकलांगता की संभावना को भी कम किया जा सकता है। ध्यान रहे की भारत में टीबीआई के मुख्य कारण में से सड़क दुर्घटना एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2030 तक सड़क दुर्घटना पांचवा सबसे बड़ा मारक होगा। एचआईवी-एड्स और टीबी से अधिक मौतें होगी, जिसकी संख्या करीब 24 लाख होगी।

उपचार

- न्यूरो रिहैबिलिटेशन से किया जा सकता है टीबीआइ का इलाज
- दुर्घटना के बाद एक घंटे के वक्त को कहा जाता है गोल्डन आवर

बाइकर्स ने दो महिलाओं से की झपटमारी

पूर्वी दिल्ली, जासं : यमुनापार इलाके में सोमवार बाइक सवार दो बदमाशों ने दो अलग-अलग जगह पर महिलाओं से झपटमारी की वारदात को अंजाम दिया। पहली घटना शकरपुर इलाके में सोमवार पूर्वान्ह हुई। क्षेत्र के जे एंड के ब्लाक निवासी फूलवती (55) पूर्वान्ह के समय अपने पोते को घर के नजदीक ही स्थित एक प्राइवेट स्कूल में छोड़ने जा रहीं थी।